कार्बेट नेशनल पार्क में हो रही गिद्धों की वापसी

पिंकी रावत

रामनगर । ज्यादा वक्त नहीं गुजरा है, जब हमें अपने गांव-देहातों या बाहर के नुक्कड़ों पर कुदरत के सफाईकर्मी कहे जाने वाले 'गिद्धों' के दर्शन आसानी से हो जाते थे। इस पक्षी के गायब हो जाने से पर्यावरण पर गंभीर खतरा मंडरा रहा है। एक अनुमान के मुताबिक अस्सी के दशक में भारत में साढ़े आठ करोड़ गिद्ध थे, मगर आज इनकी संख्या महज 4000 ही रह गई है। हालांकि सुकून की बात यह है कि कार्बेट नेशनल पार्क से सटे जंगलों में इन दिनों गिद्धों के झुण्ड दिखाई दे रहे हैं। मगर वन विभाग और संबंधित एजेंसियां सचेत न होने से इन उम्मीद की यह किरण भी बुझ सकती है। वजह, गिद्धों के सफाए का कारण बनी डाइक्लोफिनेक नाम की दवा की आस-पास के क्षेत्रों में धड़ल्ले से हो रही बिक्री है।

- पक्षी प्रेमियों के साथ वन्यजीव विशेषज्ञ भी उत्साहित

भारत में गिद्धों की कुल 9 प्रजातियों में से उत्तराखण्ड में आठ प्रजातियां पाई जाती हैं। जिनमें हिमालयन ग्रिफन, व्हाइट बेक्ड, सिलेन्डर ब्लिड, रैड हैडेड, इजिप्सियन, सिनेरियस, लामरगिरयर आदि मुख्य हैं। ये पक्षी मांसाहारी हैं और मृत सड़े-गले जानवरों को खाकर गुजारा करते हैं। मगर जानवरों को दी जाने वाली डाइक्लोफिनेक दवा के बुरे असर से गिद्धों का खात्मा होता गया है। इसके चलते लौंग बिल्ड, व्हाइट बेक्ड और सिलेन्डर बिल्ड प्रजाति के 99.9 प्रतिशत गिद्धों का सफाया हो चुका है। वर्ष 2004 में गिद्धों के सफाए की वजह से रूप में डाइक्लोफिनेक के सामने आने के बाद 2006 में जानवरों के इस्तेमाल के लिए इसकी बिक्री और प्रयोग पर पाबंदी लगा दी गई। मगर इंसानों के लिए इस दर्द निवारक का निर्माण और बिक्री जारी है।

इस दुर्लभ प्रजाति के फिर से नजर आने से पक्षी प्रेमियों के साथ वन्यजीव विशेषज्ञ भी उत्साहित हैं। मगर कार्बेट वल्चर कैम्पेन नाम से गिद्धों के संरक्षण की मुहिम में जुटे सुमांतों घोष और ओलिवर ग्रे ने बताया कि दवा की दुकानों में ह्यूमन डाइक्लोफिनेक की 30 मिलीलीटर की बोतल आसानी से मिल रही है, जो पशुओं में इस्तेमाल हो रही है। उन्होंने इसके बदले मैलोक्सीकेम के इस्तेमाल की वकालत की।